Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

भारतीय विदेश नीति: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्देश्य

Babita*

Research Scholar, Department of Political Science, M.D.U. Rohtak, Haryana, India

सारांश – ***किसी भी देश की विदेश नीति एक विशिष्ट आंतरिक व बाह्य वातावरण के स्वरूप द्वारा काफी हद तक निर्धारित होती है। इसके अतिरिक्त इतिहास, विरासत, व्यक्तित्व, विचारधाराएँ, विभिन्न सरचंनाओ आदि का प्रभाव भी विदेश नीति पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। भारत की विदेश नीति इस स्थिति का अपवाद नहीं है। भारत की विदेश नीति को सही दिशा में समझने के लिए ऐतिहासिक संदर्भ का अध्ययन करना आवश्यक है। पंडित नेहरू जी ने उचित कहा है कि यह नहीं समझना चाहिए कि भारत ने एकदम नऐ राष्ट्र के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया है अपितु भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।***1

ऐतिहासिक विदेश नीति की पृष्ठभूमि की उत्पत्ति का कारण भारतीय संस्कृति में प्रचलित दो परंपराओं से मानते है। प्रथम विचार मित्रता, सहयोग, अंहिसा इनका विकास महात्मा बुद्ध व गाँधी के विचारों से मानते है और दूसरा विचार पाश्चात्य विचारकों विशेषकर मैकयावली की विचारधारा से मेल खाती हुई कौटिल्य की परम्परा रही है। इसके साथ-2 ***वर्तमान समय में भारतीय राष्ट्रीय काग्रेंस की भूमिका व स्वतंत्रता आंदोलन के अनुभवों को भी आज की विदेश नीति की मुख्य पृष्ठभूमि माना जाता है।***

मुख्य शब्द: विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व

----------X----------

आर्थक विकास

भारतीय विदेश नीति का निर्धारत सन् 1858 लदंन में स्थापित इंडिया हाऊस में होता है परंतु इससे पहले भारत में दूसरे देशों के साथ संबंधों का निर्धारत प्राचीन राजाओं के माध्यम से अपने राष्ट्र दूतों के माध्यम से निर्धारन किऐ जाते थे। लेकिन ब्रिटेन के शासन के बाद भारत की विदेश नीति ब्रिटिश सरकार के माध्यम से बनाई जाती थी। परंतु फिर भी भारत अन्तराष्ट्रीय कानून के रूप में अन्तराष्ट्रीय व्यक्ति का स्तर प्राप्त कर चुका था। जहाँ अन्तराष्ट्रीय स्तर के व्यक्ति का प्रश्न है वहाँ पर भारत ने राष्ट्रसंघ के मसौदों पर प्रारंभिक सदस्यता के रूप में हस्ताक्षर करने से स्पष्ट हो जाती है। भारत ने प्रथम विश्व युद्ध में अग्रेंजो की भरपूर सहायता कि थी क्योंकि भारत अपनी विदेश नीति के निर्धारण में शामिल होना चाहता था। जिससे 1917 के औपनिवेशिक सम्मेलन में भारत के शामिल होने की माँग भारत की स्वीकार कर ली गई। भारत ने इम्पीरियल सम्मेलन में प्रतिनिधित्व के आधार पर पेरिस शक्ति सम्मेलन में भागीदारी का दावा प्रस्तुत किया। लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन ने भारत का विरोध किया परंतु कनाडा के दबाव के कारण भारत को पेरिस शान्ति सम्मेलन में शामिल किया गया। पेरिस शान्ति सम्मेलन में भागलेकर भारत ने वारसा की संधि व समझौतो पर हस्ताक्षर किया और राष्ट्रसंघ का प्रांरभिक सदस्य बन गया।7 सन् 1945 में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में भारत ने भाग लेकर राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर करके राष्ट्र संघ के प्रारंभिक सदस्यता प्राप्त की। इसलिए कह सकते है कि भारत स्वतंत्रता से पूर्व अन्तराष्ट्रीय स्तरपर व्यक्तित्व प्राप्त कर चुका था।8

भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत:-

समय-समय पर भारतीय सरकार के द्वारा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर लिऐ गये निर्णयों ने भारतीय विदेश नीति के मुख्य आधार तय किये। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेंस के विभिन्न घोषणाओं व प्रतिक्रियों के परिणामस्वरूप निम्न सिद्धान्तों की उत्पत्ति हुई जो निम्नप्रकार से है।

भारत सरकार ने सदैव उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद की नीतियों का विरोध किया। सन् 1885 में उत्तरी बर्मा को अपने में मिलाने की ब्रिटेन की साम्राज्यवादी नतियों की भारत ने निंदा की थी। 10 भारत सरकार ने समय-समय पर भारत को ब्रिटेन नीतियों से अलग बताया और अग्रेंजों द्वारा

www.ignited.in

दिये गये विदेशी निर्णयों को भारत की विदेश नीति का हिस्सा नहीं बताया। सन् 1921 में भारत ने कहा कि ब्रिटिश सरकार की नीति किसी भी प्रकार से भारत का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

मुस्लिम राष्ट्रों के प्रति सहानुभूति रवैया अपनाना भी कांग्रेस की देन है। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार ने तुर्की के विरूद्ध कड़ा रूख अपनाया था जिसका भारत ने विरोध किया था।13

एशिया के पराधीन देशों को सगंठित करने तथा पिछड़े राष्ट्रों के उत्थान के लिए भारत की विदेश नीति में प्रकार्य किये गऐ।

भारत ने 1926 व 1927 में चीन व जापान में होने वाले एशियाई देशों के सम्मेलन में भारत ने भाग लिया था जिसमें एशियाई देशों को साम्राज्यवाद के विस्तार को रोकने के लिए प्रयास किऐ गये थे।

गुटनिरपेक्षता:

गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का सबसे प्रमुख व केन्द्र बिंदु है। भारत के द्वारा इस सिद्धांत को अपनाने के दो मुख्य स्त्रोत थे।

1- भौतिक तत्व, 2-अभौतिक तत्व।

भौतिक तत्वों में भारत की भौगोलिक स्थिति और आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण है। गैर भौतिक तत्वों में भारत की ऐतिहासिक विरासत और भारतीय दर्शन परंपराऐं इसमें शामिल की जाती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो गुटों में बँट गया था और उस समय एक तरफ अमेरिका गुट व दुसरी तरफ सोवियत गुट था तब भारत ने अपनी विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता सिद्वांत को अपनाकर दोनों गुटों से अपने आप को अलग रखा था।

पंचशील:

भारत की विदेश नीति में एक स्वतंत्र सिद्धांत पंचशील को शामिल किया गया था। यह सिद्धांत शांति स्थापना का समर्थक है। पंडित नेहरु गुटनिरपेक्षता को केवल कल्पना तक सीमित नहीं रखना चाहते था अपितु वह इनको व्यावहारिक रूप प्रदान करना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने पंचशील में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को अपनाया और इसमें पंचशील सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता व सर्वोच्च सत्ता का परस्पर सम्मान करना, अनाक्रमण, एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता व पारस्परिक लाभ, तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व।

भारती विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य:

किसी भी देश के लिए अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा व प्रभुसता की रक्षा करना सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। भारत अपनी विदेश नीति की स्वतंत्रता का पक्षधर है। अतः भारत बाह्य हस्तक्षेप व शीतयुद्ध का सशक्त विरोधी है। इस प्रकार से भारत द्वारा अपनाई गई विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की स्वतंत्रता, सुरक्षा व सुप्रंभुता का प्रतीक है। परंतु वर्तमान समय में परमाणु युद्धों के खतरों के कारण भारत को अपनी विदेश नीति को व्यापक बहुआयामी बनाने की आवश्यकता है।

आर्थिक विकास:

भारत की विदेश नीति का एक लक्ष्य अपने देश का आर्थिक विकास करना है। भारत की विदेश नीति में उदारीकरण की नीति को अपनाकर बाह्य राष्ट्रों से आर्थिक सहायता, पूँजीनिवेश, व्यापार तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाना आवश्यक हो गया है। इसलिए भारत में प्रारंभ से विश्व बैंक व अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष से सस्ती ऋणों की माँग करता रहा है। इसके अतिरिक्त भारत दुसरे राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय आधार पर टेकनोलोजी के हस्ताक्षरण का पक्षधर रहा है।

उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद का विरोध:

भारत की विदेश नीति का एक लक्ष्य उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रगंभेद की नति का विरोध करना था। भारत ने लंबे समय तक उपनिवेशवाद की गुलामी को सहा था। इसलिए भारत ने 1949 में होलैंड के द्वारा इंडोनेशिया में साम्राज्यवाद के प्रसार के विरूद्ध आवाज उठाई थी। 1950 व 1960 के दशक में अफ्रीका व एशिया के देशों के लिए स्वतंत्रता की आवाज उठाई थी।67

निःशस्त्रीकरण का समर्थन:

भारत अपनी विदेश नीति में निःशस्त्रीकरण का पुर्नजोर समर्थन करता है। अपने विदेश नीति में भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के मंचों के माध्यम से भारत ने निःशस्त्रीकरण को लागू करने पर बल दिया है।

www.ignited.in

एफ्रो-एशियाई क्षेत्रीय सहयोग:

भारत हमेशा से एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद की नतियों का विरोध करता है और इन देशों में आपसी सहयोग की बात भारत हमेशा करता है। 1955 में बांडूग सम्मेलन भी एशिया-अफ्रीकी देशों के सहयोग पर आधारित था। सार्क के माध्यम से भारत एशिया के देशों में परस्पर सहयोग की नीति अपना रहा है।

संयुक्त-राष्ट्र में आस्था:

भारत की विदेश नीति न केवल शांति की स्थापना बल्कि परमाणु युद्धों से बचने का भी प्रयास करती है। इसलिए भारत संयुक्त राष्ट्र का प्रांरभिक सदस्य है, भारत ने इस संस्था से अपना समर्थन कभी नहीं लिया। संयुक्त राष्ट्र की सभी गतिविधियों में भारत की गतिविधि हमेशा रही है। संयुक्त राष्ट्र के शांति-स्थापना लक्ष्य का भारत ने समर्थन दिया है।

सभी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण संबंध:-

भारत की विदेश नीति का एक लक्ष्य विश्व के सभी राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों का निर्धारण करना है। इंदिरा गाँधी ने भी 31 अगस्त, 1970 को अपने भाषण में कहा था कि वैमनस्यपूर्ण स्थिति को मित्रता के माध्यम से सुधारा जा सकता है।

इस प्रकार से भारत की विदेश नीति का विकास एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर हुआ है और वर्तमान समय में भारत की विदेश-नीति एक स्वतंत्र विदेश नीति के रुप में काम कर रही है। भारतीय विदेश नीति में साम्राज्यवाद रंगभेद के विरोध के साथ-2 विश्व शांति की स्थापना राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों का निर्धारत पंचशील सिद्धांतों को वर्तमान समय में भी विदेश नीति का आधार माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. आर.एस. यादव, 'टैंडज इन द स्टडी ऑफ़ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी'
2. शीला ओझा, भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन, जयपुर, 1992, पृ. 3
3. माइकेल ब्रेचर, नेहरु: ए पोलिटिकल बायोग्राफी, लंदन, 1959, पृ0 67
4. बंधोपाध्याय, पाद टिप्पणी संख्या 19, पृ0 8
5. जवाहरलाल नेहरु, लोकसभा डिबेट्स, मार्च, 1950
6. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट, 1945-1996, नई दिल्ली, 1996 पृ. 95
7. एम.एस. राजन, इंडियाज फॉरेन रिलेशंज ड्यूरिंग नेहरू ईरा: सम स्टडीज, नई दिल्ली, 1976
8. अप्पादोराय व राजन, पाद टिप्पणी संख्या 21, पृ. 44
9. संयुक्त राष्ट्र महासभा ऑफिसियल रिकार्डज, रेजो. 49/7., 15 दिसबंर, 1993
10. देवेन्द्र कौशिक, इण्डियन ओशियनः इज ए जोन ऑफ़ पीस, नई दिल्ली, 1972

Corresponding Author

Babita*

Research Scholar, Department of Political Science, M.D.U. Rohtak, Haryana, India